अन्तरा-शब्दशक्ति

भारत भूमि वंदन और चिंतन

सामयिक काव्य संग्रह

डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

भारत भूमि! वंदन और चिंतन

(काव्य संग्रह)

डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-032-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
मूल्य- ४५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
BHARAT BHUMI-VANDAN AUR CHINTAN BY DR. MANORAMA GUPTA
वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय 5

1. हिन्दी भाषा सिरमोर बनाना है 7

2. भ्रष्टाचार पर प्रहार 9

3. अनसुलझी कश्मिर समस्या 10

4. आरक्षण पर पुर्नविचार 11

5. समरसता का संदेश 12

6. स्वतंत्रता की रक्षा 13

7. आतंकवाद पर शांति संदेश 14

8. भारत के गौरव ‘हमारे शहीद’ 15

9. मतदाता की चाह 16

10. भारत भूमि! वंदन और चिंतन 17

11. भारत में अच्छे दिन आयेंगे/ हमारे सपनों का भारत 19

12. भारत में बेकारी की समस्या 22

पुस्तक परिचय
‘भारत भूमि- वंदन और चिंतन’

‘एक प्रणाम कई परिणाम बदल देता है। इसलिए समस्त पाठकगण सर्वप्रथम मेरा प्रणाम स्वीकार करें। “इतने वर्षों से हम पिंजरे को सजाते चले आ रहे हैं, किन्तु अंदर का तोता भूखा-प्यासा और उपेक्षित है”।

“गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टेगौर” का यह कथन हमारे भारत देश में मानो अक्षरश: चरितार्थ हो रहा है। स्वतंत्र भारत में विकास योजनायें विगत उन्हत्तर वर्षों से चल रही है, किन्तु आज भी हम अपनी समस्याओं पर विजयश्री प्राप्त करने में कामयाब नहीं हो सके। आपको समर्पित पुस्तक में मैंने भी कुछ राष्ट्रीय समस्याओं पर अपनी तूलिका से भावनाओं के रंग भरने की कोशिश की है। यद्यपि मेरे मन मस्तिष्क में दिग्गज साहित्यकारों जैसी न तो संवेदनायें हैं और न शब्द शक्ति। बस हैं तो केवल अल्प भाव, जो आपके अवलोकनार्थ पुस्तक में संजोकर रखे हैं, ताकि परिमार्जन हो सके, मेरी साहित्य साधना का और मैं अनवरत इस पथ पर आपके प्रेम सहयोग से बढ़ती रहूँ।

“साहित्य की जड़ें जमीन में होना चाहिए और उनके लक्ष्य, उसका स्वरूप, उसकी व्यवस्था तथा पद्धति अपने देश की प्रतिभा और परम्परा से ही मेल खाती हो, न कि किसी की मात्र नकल। हमें खिड़की हमेशा खुली रखना चाहिये, ताकि स्वच्छ निर्मल हवा किसी भी दिशा में आ सके। बस इसी आशा से मैनें समस्यायें एवं

समाधान काव्य संग्रह के रूप में आपके समक्ष रखे हैं। मैं आपके सुझावों का हृदय से स्वागत करती हूँ।

धन्यवाद

रचनाकार
डॉ. मनोरमा गुप्ता
(पिपरसानिया)
'रमारमेश' जबलपुर

हिन्दी भाषा सिरमोर बनाना है

हे हिदंवासियों जाग उठो, सबको चिर निन्द्रा से जगाना हैं,
सच्ची मेहनत से मिलजुलकर निज भाषा का मान बढ़ाना है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के सप्त दशक, पूर्ण हुये भारत में बतलाना है।
संकल्प करें मिल अष्ट दशक में हमें नया सबेरा लाना है।

भाषा संविधान विधेयक तिरेसठ का पुर्नविचार हेतु बुलाना है।
संशोधन संभव पंद्रह वर्ष बाद, शांतिपूर्ण मुद्दा हमें उठाना है।

वैदिक भाषा, संस्कृत की बेटी, होती क्यों भारत में हेटी
शुभारंभ करें नेक काम का, राष्ट्रभाषा सम्मान दिलाना है।

अंग्रेजी प्रभुता पर राजनीति अब नहीं स्वदेश में करना है।
निज भाषा का गौरवत्व, अब दिल से नहीं भुलाना है।

हर विभाग में प्रयोग प्रसार, नयी नकनीक में पहचान बढ़ाना,
सीखें अंर्तराष्ट्रीय भाषायें भी, पर हिन्दी शीर्षस्थ बनाना है।

राज्यो में हिन्दी की संग सहेली, क्षेत्रीय भाषायें भी फैलाना है,
राजकाज की सहचरी बने विलुप्त भाषायें हमें बचाना है।

रोजी-रोटी, कृषि व्यवसाय में सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान बढ़ाना है।
भारतीय संस्कृति की मान मर्यादा, कर्णधारो को नहीं भुलाना है।।

प्रांतीय भाषायें और अलबोलियाँ इसकी छत्रछाया में बसाक्त है।
बहुभाषीय राष्ट्र है भारत विश्व में फिर सम्मान बढ़ाना है।। हिन्दी भाषा

जाति भाषायें, विविध धर्म, अखंड भारत की पहचान समझाना है।

हिन्दू-उर्दू हिन्दुस्तान की बेटियाँ, हर कीमत पर अस्तित्व बचाना है।

यदि स्वदेश में ही निज भाषा का, गौरव हम नहीं बढ़ायेंगे।
फिर सोचो अखिल विश्व में कैसे कीर्ति पताका फहरायेंगे।।
हिन्दी भाषा,...

भ्रष्टाचार पर प्रहार

सुरसा के मुख सा बढ़ता जाता है भ्रष्टाचार।
कब युवा वीर हनुमान करेंगे भारत पर उपकार।।

शिक्षा जगत में लूट मची है, कुशल छात्र भी हुये लाचार।
रिश्वत खोरी आसमान छू रही, छूमंतर है विचार आचार।।

धर्म गुरू बनकर भारत में, रिश्तों को किया शर्मसार।
पाखंडी ढोंगी, साधु संतों ने किया यहाँ अभद्र व्यवहार।।

स्वास्थ्य क्षेत्र भी नहीं अछूता होता है अंगों का व्यापार।
बालिका भ्रूण हत्या के खातिर डॉक्टर ही करते अत्याचार ।।

सरकारी और निजी संस्थान भी हैं, घूसखोरी से बदहाल।
सेना और सुरक्षा विभागों पर भी उठ रहे हैं आज सवाल।।

राजनीति भी नहीं अछूती, दागी नेता कर रहे हैं राज।
दलगत नीति हावी हो रही, गठबंधन की बनी सरकार।।

बैंक घोटाले बढ़ते जाते, टूट गया जनता का विश्वास।
अरबो-खरबों की हेरा फेरी कर व्यवसायी कर रहे प्रवास।।

जायजाद-प्रापर्टी के खातिर खुद हत्यारे बन गये परिवार।
पास पड़ोसी, शिक्षक, संबंधी ही कर रहे है यौन अपराध।।

अंत नही है कोई इसका, जहाँ देखो वहाँ ही भ्रष्टाचार।
अंधा है कानून अगर तो, कहाँ लगाये न्याय -गुहार।।

अनसुलझी कश्मिर समस्या

कश्मिर भारत का मुकुट है भाई इसे संभाले रखना।
सपने में भी नही सोचना इसको पाक हवाले करना।।

रहती हर दिन ही यहाँ पर, आतंकी हमले की आशंका।
राजनैतिक दल सब पीट रहे अपनी कामयाबी का डंका।।

सच्चे देश भक्त वे दल हैं जो, दे सकें कश्मिर को संरक्षण।
न कि उसको ही अस्त्र बनाकर करें वहाँ शांति का भक्षण।

चार-दीवारी में बंधने को बहन बेटियाँ आज विवश है।
कब कहाँ हो जाये बमबारी, भय से रोजगार भी ठप्प हैं।

आजादी के सत्तर वर्ष बाद भी गुत्थी नहीं सुलझा पाये।
या फिर सत्ता के खातिर यारों ये हथकंडे ही अपनाये।

जिस थाली में खा रहे हो बेटों उसमें छेद नहीं करना।
दलगत स्वार्थ सिद्धि के लिए अपनों से गद्दारी न करना।।

यदि धर्म जाति, दल से ऊपर उठकर नेता करते प्रयास।
तो दूर हो जाते अब तक कश्मिर वासियों के कष्ट त्रास।।

आरक्षण पर पुर्नविचार

हर जाति धर्म भाषा के हितार्थ जब देश ने संविधान बनाया।
फिर क्यों वोट की राजनीति ने, भारत में आरक्षण गहराया।।

अच्छी सर्विस देकर जिनको, उच्च प्रशासनिक पदों पर बैठाया।
फिर क्यों वही परिवार दोबारा, पिछड़ा दलित शोषित कहलाया।

पिछड़ा वर्ग शब्द का आशय, क्यों जातिगत 'जंजीरों' में बांधा।
निर्धन, साधनहीन सवर्ण ने, आखिर क्या! शासन का बिगाड़ा।

हिन्दु-मुस्लिम, सिक्ख-इसाई, राजनेताओं ने इनमें भेद बढ़ाया।
"समानता का अधिकार" मनमानी व्याख्या से असमान बनाया।।

योग्यता के दोहरे मापदण्ड से, चहूँ ओर युवा आक्रोश है छाया।
अनुचित नीति समर्थन ने ही, शिक्षा कौशल स्तर निम्न गिराया।

आरक्षण को प्राथमिकता देने में, सवर्णों को कोई एतराज नहीं।
किन्तु समान अंक समान योग्यता शर्तों का मापदण्ड ही सही।।

धर्म आस्था प्रतीकों पर दुश्प्रहार कर, अधर्मी पतित कहलाओगे।
ओछी बुद्धि, निकृष्ट कृत्यों से, अपना आत्म सम्मान गवाओगे।

यदि थूकोगे चांद पर यारो तुम खुद मलीन हो जाओगे।
भारतीय संस्कृति को अपमानित कर, क्या निज लक्ष्य को पाओगे।

कमजोर कड़ी बनकर समाज की, कैसे राष्ट्र विकास कर पाओगे।
बल बुद्धि कौशल को विकसित कर, राष्ट्र क्या विश्व में छा जाओगे।।

समरसता का संदेश

समरसता का सिद्धांत अपनाकर यदि हम विकास के कार्य करें।
वेतनवृद्धि, पदोन्नति पर सम कार्य, समय वेतन पर पुर्नविचार करें।।

शासकीय, अशासकीय व निजी सेवाकर्मी का भेदभाव समाप्त करें।
नेता, विधायक, सांसद, मंत्री भी जनसेवक है इसका ध्यान रखें।।

प्रजातंत्र के हर मतदाता की यदि सच्ची सेवा ही हमको करना है।
तो पहले इनकों घरों में झांको, बस मुझको इतना ही कहना है।

समरसता पर जो वादे किये अब आपने उनको कैसे पूरा करना है।
मातृभूमि की सेवा हेतु हमें शिक्षा अपने वीर शहीदों से लेना है।।

निजी क्षेत्र के सेवाकर्मी कैसे अल्प आय में अपना जीवन निर्वाह करें।
शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास के बढ़ते रखें, बिजली, पानी, बढ़ते कर कैसे भरें।

एक ओर पद पदोन्नति पांचवा, छठवां, सातवां वेतन और मंहगाई भत्ते।
सम कार्यक्षेत्र के निजी सेवक को प्रदत्त वेतन पर चपरासी भी हंसते ।।

सौ दिन की रोजगार गारंटी, कहीं संविदा नियुक्ति वर्ष कैसे रहते।
अरे नेतागण बंधु भाई कभी झांकों, जीवन में कितने कष्ट सहते।।

स्वतंत्रता की रक्षा

खुले आकाश में आर्यावर्त का तिरंगा कैसे लहराया।
स्वतंत्रता के सात दशक में यह विचार फिर गहराया।।

वीरों का बलिदान हमें फिर याद पुरानी ले आया।
कैसे जातीय राष्ट्रीय एकता से अंग्रेजों को दूर भगाया।

कितनी गोदें सूनी हुई, कितनी ही मांगे उजड़ी।
कितनी ही बहिनों के वीरो ने अपनी आँखे मूंदी।।

देश के खातिर लुटा दिया, देश भक्तों ने सोना-चांदी।
उन सबके बुलंद हौंसलों से, ही पायी थी हमने आजादी।।

सामंतवाद की जड़ें हिलायी, तोड़ी सभी दीवारें, राजतंत्र की।।
''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' एक आवाज सभी धर्म जाति पंथ की।।

''फूट डालो राज करो'' यह कूटनीति थी अंग्रेजों की।
स्वविवेक से संगठित होकर, वीरों ने उनको मात दी ।।

''एकता में बल है'' और संगठन में है अनुपम शक्ति।
नर, नारी, युवाओं, वृद्धों में संचारित हुई ऐसी राष्ट्रभक्ति।।

तन, मन, धन साहित्य सृजन से पायी यह अमूल्य निधि।
रक्ष करेंगे, युगों-युगो तक, अपनाकर श्रेष्ठ सुरक्षा विधि।।

आतंकवाद पर शांति संदेश

ये खून खराबा और जंग रोककर, अब भी संभलो तुम पाकिस्तान।
इतने आतंकी हमले करके क्या, मिले कभी कोई शुभपरिणाम।।1।।

लाशे बिछ गयीं उनकी भी सोचो, जो थे शायद खुद से अनजान।
लालच देकर भूखे प्यासे बच्चों को क्यों बना रहे आंतकी शैतान।।2।।

परवरिश करने को परिवारों की, बिक जाते करोंड़ों में नौजवान।
भोग विलास में डूबे नेतागण, रखते नहीं बेबसों का ध्यान।।3।।

आतंकवादी शिक्षा और प्रशिक्षण से हजारों मासूम बन रहे हें हैवान।
पत्थर फेंकते, बंदूक उठाते है वे काली करतूतों से ली सैंकड़ों जान।।4।।

विनाशी शक्तियों में गंवा रहे जो पैसा, देशहित में लगाकर करो राष्ट्र उत्थान।
शिक्षा संस्कार देकर युवाओं को, करो तुम महिला और बाल कल्याण।।5।।

द्वेश के से तो मिलेगा, प्रेम के बदले प्रेम, आतंक त्याग, करो मित्रता का आव्हान।
स्वागत करेंगे सब बाँहे पसारकर, शुरू करें हम मानवता अभियान।।6।।

भारत के गौरव ‘हमारे शहीद’’

भारत माँ के वीर शहीदों को, हम बारम्बार नमन हम करते हैं।
साष्ट्रांग प्रणाम मात-पिता को, लाड़लों को रक्षार्थ भेजते हैं।।1।।

वीरांगना पत्नीवृंद को वंदन, जीवन पथ पर अकेले चलती है।
निजी दायित्वों को वहन कर, पति बलिदान अमर करती है।।2।।

धन्य-धन्य वे वीर सपूत, जो पितृ पथ अनुशरण करते हैं।
पिता-दुलार से वंचित जीवन, किन्तु मातृभूमि रक्षा वरण करते हैं।।3।।

खाकर गोली अंगो पर, असहय वार शस्त्रों के सहते हैं।
प्रताड़ित करने पर भी दुश्मन के अपनी जुवां नहीं खोलते हैं।।4।।

निज शरीर का मोह नहीं, भूखे प्यासे सीमाओं पर डटे रहे।
गोला, बारूद धमाकों में भी, वे सीना तानकर खड़े रहे।।5।।

सेना के शौर्य पराक्रम से ही, हम जीवन के सुख भोग रहे।
उनके बलिदानों का सबूत मांगें, कैसे निष्ठुर हैं वे लोग अरे।।6।।

इन वीरों के परिवार जनों को, यदि शासन सत्ता हम सौंप सके।
तो शायद उनके बलिदानों का कर्ज हम देशवासी भी चुका सकें।।7।।

मतदाता की चाह

चाह नहीं है राष्ट्र नेता, कोई, अमीर कुल का शहजादा हो।
चाह नहीं, हो उच्च शिक्षित, राजनैतिक दलों का प्यारा हो।

चाह नहीं नेताओं के वंशज, संभाले भारत की बागडोर।
चाह नहीं कोई बागी नेता, करें आत्मगान या पार्टी का शोर।।

चाह नहीं अनुशासनहीन मानव, करे सभाओं में अभद्र व्यवहार।
गाली-गलौच और हाथापायी कर जूते चप्पल से वे करें प्रहार।।

चाह नहीं ऐसे नेताओं की, वीर शहीदों पर करें अविश्वास।
देश के रक्षक नौजवानों की, शहादत पर ही कर रहे सवाल।।

चाह नहीं दलबदलू नेताओं की, सत्ता के लिए पार्टी का त्याग करे।
कौरवों के कपटी महारथी सम, वीर अभिमन्यु का छदम घेराव करें।।

चाह हमें अब ऐसे नेता की, जो जनता से सच्चा प्यार करे।
राष्ट्र सेवा के लिए हो समर्पित, सदा जीवन, उच्च व्यवहार रखें।।

चाह हमें ऐसे कर्णाधार की, जो आस्थावान, चरित्रवान निस्वार्थी हों।
भारत विशाल सुसंस्कृत, राष्ट्र रथ का कृष्ण सम कुशल सारथि हो।।

भारत भूमि! वंदन और चिंतन

शत-शत वंदन मातृभूमि को, जिस पर हमने जन्म लिया।
लख-लख अभिनंदन आर्य भूमि, जिसने प्यार दुलार दिया।।
शीश झुकाये उन मात-पिता को, मानव तन जिनसे पाया।
रंग रूप मृदु वाणी पाकर, कहलाये हम उनकी ही छाया।।

जन्म लिया जिस धरती पर हमने, वह जन्मभूमि कहलाती ।
खेले-कूदे गोद में उसकी हम, वह माता सम हमको सहलाती ।।
शीश नवायें इस मातृभूमि को, जीवन हमने इससे पाया ।
अहो भाग्य! मानुष तन पाकर, इस भारत भूमि पर आया।।

न जाति बड़ी, न धर्म बड़ा, न महाबलि कोई जग में दूजा।
हैं सर्वशक्तियाँ मातृभूमि में, कर लो मानव इनकी पूजा ।।
मीठे निर्मल अमृत जल से, सबने प्यास बुझाई।
मुक्त गगन में साँसे लेकर, प्राण वायु इससे ही पाई।।

हरी भरी धरती माता ने, उत्तम आहार दे हमको पाला।
बचाकर वर्षा ग्रीष्म शीत से, दिया रवि शशि का उजियाला।।
किस जाति के है हम भाई, क्या है बोलो धर्म हमारा।
कब आये थे, कहाँ से आये? भेद मिटा दो ये सारा।।

आज जहाँ हम बड़े हुये हैं, जिसने हमको दिया सहारा।
उस मातृभूमि की रक्षा करना ही, एकमात्र है धर्म हमारा।

‘कर्म बड़ा है’ सदा रहेगा, अटल सत्य गीता का जानो।
जाति-धर्म के खातिर लड़ना, उचित नहीं भारतीयो मानो।।

जो है ममता त्याग की मूरत, हम उसको ‘माता’ कहते ।
फिर माँ के खातिर हिंसा करना, क्या धर्म इसी को कहते ?
जन्मदायिनी माँ से बढ़कर, पालन हारिणी माँ कहलाती।
आने वाले हर कष्टों से, वह लड़ना हमें सिखलाती है।।

माँ की पीड़ा समझ सके तो, निज मातृभूमि को पूजोगे।
वरना आपस में लड़ भिड़कर, अपना जीवन खोओगे।।
देश भक्ति का पाठ पढ़ो तुम, समझो कौन हमारा देश।
उस थाली में छेद करो कभी न, जो भरती हम सबका पेट।।

क्या कभी गर्व से सिर ऊँचा, कर पायेंगे हम सभी यहाँ।
बस देश द्रोही ही कहलायेंगे, अखिल लोक परलोक जहाँ।।
मत बांटो धरती माँ को बंदो, जाति, धर्म के आधार से ।
बचा लो अपनी राष्ट्र नैया को, मानवता की दृढ़ पतवार से।।

निज मातृभूमि पर रंग बिरंगी, भाषा, संस्कृति के फूल चढ़ाओ।
अटूट श्रृद्धा के सुंदर गहनों से, भारत माँ को सजाओ।।
जन्मभूमि के मस्तक पर तुम, देष भक्ति का ताज लगाओ।
राष्ट्रीय एकता, अखंडता की, आर्यभूमि में अलख जगाओ।।

भारत में अच्छे दिन आयेंगे/ हमारे सपनों का भारत

हमारा संकल्प-
नया जोश है, नयी उमंगे, होंगे सब सपने साकार।
अच्छे दिन आयेंगे देश में बनेंगे अब नये दृढ़ आधार।।
तिरेसठ लाख ग्राम भारत के अब निर्मल ग्राम बनेंगे।
हर ग्राम्यवासी के हित में, हम मिलकर कार्य करेंगे।।

हमारे गाँव-हमारा भारत-
पले होंगे गाँवों के हर घर में, गाय भैंसें और बैल।
गोबर से लिपे पुते द्वार, होंगे पक्के मकान दीवाल।।
मिट्टी की भीनी-भीनी खुशबू से महकेगा घर आँगन।
जिनमें लगी हुई हो सब्जियाँ, फूल-फल, आम, बिही, जामुन।।

छतों पर लगी हों चमचमाती सौर ऊर्जा प्रकाश प्लेटें।
जगमगा उठेंगी जिनके प्रकाश से घर-घर की चैखटें।।
गोबर गैस प्लांट से, घर-घर में जलेंगे धुयें हीन चूल्हे।
गायों के शुद्ध दूध से बनी चाय कॉफी को कोई न भूले।।

दूध दही घी मिलेगा अब रोज अम्मा बाबू जी के लिए।
मक्खन, मलाई दूध रबड़ी, रोज लाड़ला-लाड़ली पियें।।
धुयें राख से मिलेगी मुक्ति, गाँव की बहुरानियों को।
विविध भोजन खिलायेंगी वे, अपनी दादी नानियों को।।

घरों के चारों ओर हरियाली घास होगी गायों के लिए।
नीम बरगद पीपल के पेड़ों की छाया राहगीरों के लिए।।

गेंदा गुलाब, बेला कनेर सेवंती की महकती फुलवारियाँ।
उद्यानों बडे बगीचों में हों मौसमी फलों से लदी हुई डालियाँ।।
गोबर की देषी खाद, मिट्टी से उपजाऊ हरे भरे खेत होंगे।
गेहूं **चा**वल, दलहन और तिलहन से खेत सभी लहलहायेंगे ।।

कुंए तालाब नहरों में, भी निर्मल मीठा ठंडा जल होगा।
ऐसा ही स्वर्णिम, खुशहाल हमारे गाँवों का कल होगा।।
मिटे सबकी भूख, मिले पोशक भोजन हो पूरी सबकी आस।
घर-घर पहुँचे नल का पानी, बुझे जन, पशु पक्षी की प्यास।।

सांझ ढलते ही टिमटिमायेंगे, गाँवों में बल्वों के रंगीन दिये।
सांय सांय करते बिजली-पंखों की ठंडी हवायें सबको मिले।।
वाह! अब गाँवों की धरती को ग्राम्यवासी स्वर्ग बनायेंगे।
गाँवों के देश' भारत को विकसित देशो से जोड़ पायेंगे।।

होंगे हर प्रदेश में स्वच्छ, शौचालय आवास संपन्न ग्राम।
न कहीं भी होगी गंदगी प्रदूषण, न धूल धुयें भरी शाम।।
न सूखने देंगे हम कहीं भी, कुंये तालाब नदियाँ।
नहीं गिरने देंगे जलस्तर, देखेंगी अब सारी दुनिया।।

छोटी सूखी नदियों को बड़ी नदियों से जोड़ते जायेंगे।
बारिश के पानी को भी हम हार्वेस्टर रीति से बचायेंगे।
कला, संस्कृति विज्ञान, प्रौद्योगिकी की सबको मिलेगी शिक्षा।
इस हेतु नहीं मांगेगे हम विदेशो से कोई ऋण या धन भिक्षा।।

ज्ञान, विज्ञान तकनीक निवेश का आदान-प्रदान करेंगे।
मैत्री, सहयोग, और सदभावना से अब हमेशा आगे ही बढ़ेगे।।
अब होगी अपनी धरती और अपना ही सुंदर आसमा।
स्वदेशी रोटी कपड़े और स्वदेशी घर मकान आसियाँ।।

हर फसल का होगा बीमा हर व्यक्ति का बैंक में खाता।
वृद्धों को पेंशन, जननी सुविधा और सबको अच्छी शिक्षा।।
रोजगार के अवसर बढ़ाने हेतु, मिलायेंगे विदेशियों से हाथ।
हर भारतीय कुबेर देगा, उद्योगों के लिए एक दूसरे का साथ।।

न बेचेंगे हम कभी अपनी धरती, रोजी-रोटी पाने के लिए।
न ही मांगेगे वस्त्र, ग्रामीणों का तन ढँकने के लिए।।
अपनी मेहनत विद्या बुद्धि से, अपना देश हम बचायेंगे।

भारत की शान है गाँव, सब मिलकर इन्हें सजायेंगे।।

यह वादा है आपसे देश के लाखों कर्मठ नौजवानों का ।
पक्का इरादा है अब, भारत की माँ बेटी बहू बहनों का।।
हर भारतवासी, स्वर्णिम राष्ट्र विकास का बीड़ा उठायेंगे।
देश की सभ्यता-संस्कृति को हम हमेश-हमेशा बचायेंगे।।

भारत में बेकारी की समस्या

आज देश में फैल रही है, दिन प्रतिदिन बेकारी।
इस बेकारी के ही कारण, है परेशान नर नारी।।1।।

नहीं मांगते हम धन संचय न ही भोग विलासों को।
बंद करो अब राजनीति के घिनौने खेल तमाशो को।।2।।

पक्षपात, उत्कोचमयी, शिक्षा जो हमको देने वाले है।
वे क्यों चिंता करेंगे उनके घरों में पड़े निवाले हैं।।3।।

दूषित शिक्षा जो हमें मिल रही होती धन की बर्बादी है।
सिर्फ इसीलिए नयी पीढ़ी हो रही आज नकल की आदी है।।4।।

एक ओर से भूखा मानव मांग रहा है हाथ पसार।
दूसरी ओर तड़पते बच्चे और घर में पत्नी है बीमार।।5।।

चाय और लेमन को छोड़ो, इनके लिए न पानी है।
मध्यम वर्ग के लोगों की जीवन के यही कहानी है।।6।।

कड़ी धूप, जाड़ा, बारिश में, मेहनत करते है, दिन रात।
उन पर ही होता रहा सदा से धन कुबेर का बज्र-निपात।।7।।

अपने परिश्रम से जो चांदी भरते हैं जौ के दानों में।
सिसक रहा है, उनका खून पसीना भी खलिहानों में।।8।।

रामराज्य का गीत गा रहे देश के सरकारी फ़ंडे है।
उन्हे क्या पता श्रमिक वर्ग के अरमान क्यों ठंडे है।।9।।

स्वराज्य का सपना लेकर जो द्वारे पर आहें भरता है।
कौन यहाँ पर उस किसान के, दु:ख की चिंता करता है।।10।।

यदि भारत को पुनः हमें विश्व का सरताज बनाना है।
तो हर भारतवासी को अब अपनी मेहनत का खाना है ।।11।।

यह बेकारी भारत में अब रूप धरे आंधी तूफानों का।
चूर-चूर हो अंत करे भारत, अपने ही अरमानों का।।12।।

रिश्वत रूपी इस दानव को, निज पथ से दूर हटाना है।
परिवर्तन कर शिक्षा पद्धति में, देश का भविष्य बनाना है।।13।।

सर्वप्रथम कृषि को ही अपना, प्रमुख लक्ष्य बनाना है।
और देश के लघु कुटीर उद्योगों की उन्नति करवाना है।।14।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)
जन्म - 05 मई 1956
पिता-माता - स्मृति शेष श्री चंद्रिका प्रसाद - सरोज मोर, कटनी
पति - डॉ. रमेश गुप्ता, नशामुक्ति क्लीनिक
पुत्र-पुत्रवधु - इंजी. सौरभ - इंजी. शुभ्रा
पुत्री - इं. सोनिका - दामाद इं. सौरभ मांडल
बगिया के फुल- सृष्टि, श्रीनिका, श्रेयान
शिक्षा - पीएच.डी. (अर्थशास्त्र), एम.ए. हिन्दी आयुर्वेद रत्न
पद - सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, केशरवानी महाविद्यालय
कार्य - प्राचार्य- आदित्य वीमेन कॉलेज जबलपुर
सम्प्रति - आजीवन सदस्य - हिन्दी लेखिका संघ, जबलपुर, गहोई बंधु मासिक पत्रिका, अखिल भारतीय वैश्य महासभा, अखिल भारतीय गहोई महिला सभा।
विधा - लेख, कविता, निबंध, संस्मरण, कहानी, लघुकथा, रिपोर्ट्स आदि।
पता - डॉ. रमेशचन्द्र गुप्ता, 250 दक्षिण मिलौनीगंज, पोस्ट आफिस गली, जबलपुर (म.प्र.)
संपर्क - 2650060, मो. 9993253556, 9300109040
प्रकाशन - प्रकृति के रंग बच्चों के संग (बाल गीत संग्रह) - अंतर शब्दशक्ति प्रकाशन।
महाविद्यालयीन शोध पत्र लेखन, लेख, कवितायें, कहानियाँ, रिपोर्ट्स
संपादन - महाविद्यालय पत्रिका 'केसर' के स्वर्ण जयंती विशेषांक 'स्मारिका'।
सह संपादन - महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका 'जागरण'
1975 से निरंतर अनेक पत्र-पत्रिकाओं समाचार पत्रों में रचनाओं निरंतर प्रकाशन

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-032-2

मूल्य- 45/-